संस्कृति
(Culture)

मानव समाज और पशु समाज मे भिन्नता का आधार संस्कृति है। मानव संस्कृति का धारक, संवर्द्धक और निर्माता है। समाजो मे भी भिन्नता का आधार संस्कृति है, जिसे सांस्कृतिक भिन्नता (Ethinicity) कहते हैं, जो व्यवहारों, आचरणो और दैनिक जीवन के सभी पक्षो में दृष्टिगत है।

समाज विज्ञानो में संस्कृति प्रत्यय के भिन्न अर्थ निकाले जाते हैं, इतिहास मे संस्कृति को मूल्य व विकास के परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है। जबकि समाजशास्त्र के अंतर्गत संस्कृति की अवधारणा को विशिष्ट अर्थ मे, मानव व पशु विभेद पर, जबकि मानवशास्त्र में संस्कृति को समाज व्यवस्था के अंतर्गत पढ़ा जाता है।

टायलर (Book-Primitive Culture-1871): "संस्कृति वह जटिल, समग्र संकुल है, जिसमे ज्ञान, कला विश्वास, कानून, प्रथा व अन्य आदते व क्षमताएं है, जिन्हे मनुष्य ने समाज के सदस्य के रूप में ग्रहण किया है।"-**पहली वैज्ञानिक परिभाषा।**

टायलर ने इस बात पर बल दिया कि संस्कृति

- एक सामाजिक विरासत है।
- समाज द्वारा व्यक्तियो को दिया गया उपहार है।

हर्षकोबिट्ज (Book-Man and His work): "संस्कृति पर्यावरण का मानव निर्मित भाग है।" (Culture is the Man Made part of Environment)

- चांद, सितारे, पहाड़ आदि संस्कृति नहीं है।
- प्रकृति का सिर्फ मानव निर्मित भाग ही संस्कृति है।

मैलिनास्की: संस्कृति जीवन व्यतीत करने की एक विधि है, (संपूर्ण विधि) जो

- शारीरिक (Biological) आवश्यकताएं
- मनोवैज्ञानिक (Psychological) आवश्यकताएं

व अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करती है और उसे (मनुष्य को) प्रकृति के बंधनो से मुक्त करती है।

लिंटन: एक समाज की संस्कृति अपने सदस्यों के लिए जीवन जीने का ढंग है, विचारो, आदतो का संग्रह है, जो कि वे सीखते है, सहभागी बनते है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी मे हस्तान्तरित होते हैं।

आर. बीयरस्टीड (Social Order-Book):संस्कृति उन वस्तुओं का गूढ़ संग्रह है, जो समाज के सदस्यों के रूप में हम सोचते हैं, रखते है और करते हैं। वीयरस्टीड ने अपनी परिभाषा में संस्कृति के तीन तत्वों

1. Thinking
2. Doing
3. Having की चर्चा की है।

लेस्ली व्हाइट: संस्कृति कुछ अद्भुत पदार्थो का संगठन है, क्रियाएं (व्यवहार, आदर्श) और वस्तुएं (उपकरण, उपकरणो से बनी हुयी वस्तुओं) विचार (विश्वास, ज्ञान) और भावनाएं (मनोवृत्तियों) जो कि लाक्षणिक संकेतो के प्रयोग पर निर्भर है।

NET, JRF Manish Singh LG Cla

मजूमदार व मदन : "व्यक्ति संस्कृति का निर्माता उतना ही है, जिनता ही उसका दास व वाहक।"

पिडिंगटन : संस्कृति उन भौतिक व बौद्धिक साधनो या उपकरणो का योग है, जिनके द्वारा व्यक्ति अपनी प्राणिशास्त्रीय तथा सामाजिक आवश्यकताओं की संतुष्टि एवं अपने पर्यावरण से अनुकूलन करता है।

P.H. Landis: संस्कृति वह दुनिया है, जिसमे एक व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक निवास करता है। चलता है, फिरता है और अपने अस्तित्व को बनाए रखता है।

ब्रूम व सेल्जनिक: समाज विज्ञानो में संस्कृति का अर्थ मनुष्य की सामाजिक विरासत से लिया जाता है। जिसमे ज्ञान विज्ञान, विश्वास व प्रथाएं आती है।

पावेल: संस्कृति सीखा हुआ व्यवहार है, जो सीखा जा सके वही संस्कृति है।

Ruth Benedict: व्यक्ति की भांति संस्कृति, विचार और क्रिया का एक बहुत सुस्थिर प्रतिमान (Pattern) है।

क्लूखान: एक समाज विशेष के सदस्यों द्वारा ग्रहण किये गये, एक जीवन का ढंग ही संस्कृति है।

फेयर चाइल्ड: प्रतीको द्वारा सामाजिक रूप से प्राप्त एवं संचारित सभी व्यवहार प्रतिमानो के लिए सामूहिक नाम संस्कृति है।

सी.एस. फोर्ड: संस्कृति मे समस्याओं के सुलझाने के परंपरागत तरीको या समस्याओ से सीखो हुये हलों का समावेश होता है।

डेविड विडने (मानवशास्त्री): ने संस्कृति को मानव प्रकृति के स्वसंधान तथा भौगोलिक पर्यावरण के संसाधन के रूप में प्रस्तुत किया।

विडने के अनुसार: संस्कृति

- कृषि तथ्यो (Agro Fact)
- शिल्प तथ्यो (Artifact)
- समाज तथ्यो (Socifact)
- मानस तथ्यो (Mentifact)

की उत्पत्ति है।

यहां कृषि तथ्यो का अर्थ कृषि की उत्पत्तियों, शिल्प तथ्य का उद्योग की उत्पत्तियों तथा समाज तथ्य का अर्थ समाज की उत्पत्ति, सामाजिक संगठन आदि व मानव तथ्यो का तात्पर्य मानव की उत्पत्तियों जैसे-भाषा, धर्म, कला से है।

मैरेट: मैरेट ने संस्कृति को संप्रेषणीय प्रबुद्धता (Communicable Intelligence) के रूप में परिभाषित किया।

रेडफील्ड इसी दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुये संस्कृति को शिल्प तथ्यो, सामाजिक व प्रतीको मे निहित पारस्परिक अर्थो की समग्रता बताते हैं।

इ.ए.हाबेल: संस्कृति को एक एकीकृत व्यवहार प्रतिमानो का संपूर्ण योग कहा। (Culture is the sum total of integrated learned behaviour pattern)।

Krober: क्रोबर के अनुसार संस्कृति अधि सावयवी (Super Organic) व अधि वैयक्तिक (Super Individual) होती है।

अधि सावयवी (Super Organic) **शब्द का प्रयोग सबसे पहले स्पेन्सर ने किया था।**

संस्कृति मानव समाज का अर्जित गुण है, यह परंपरा द्वारा सुस्थिर रहती है। परंपरा द्वारा अर्जन का तात्पर्य यह है कि मनुष्य मे सीखने की क्षमता होती है, इसलिए व्यक्ति को संस्कृति का धारक कहा जाता है।

संस्कृति एक सामाजिक विरासत है, प्रकृति केवल पर्यावरण प्रदान करती है,

NET, JRF Manish Singh EG Cla

संस्कृति इसी पर्यावरण का मानव निर्मित भाग है। यानि संस्कृति का सृजन मानव मस्तिष्क मे होता है। दूसरे शब्दो मे मनुष्य अपने जिस व्यवहार को समाज द्वारा सीखता है वहीं संस्कृति है।

विशेषताएं:

1. संस्कृति मे सहभागिता होती है। (स्वीकृत व मान्य)
2. संस्कृति सीखी जाती है।
3. मानव निर्मित होती है।
4. संस्कृति मानवीय आवश्यकताओ की पूर्ति करती है।
5. संस्कृति संगठित होती है।
6. संस्कृति मे संचरण का गुण पाया जाता है।
7. प्रत्येक समाज की एक संस्कृति होती है।
8. समूह के लिए संस्कृति आदर्श होती है।
9. संस्कृति मे अनुकूलन करने का गुण होता है।
10. प्रत्येक संस्कृति के अपने आचार तत्व (Ethos) होते हैं।
11. भाषा संस्कृति का मुख्य वाहक होती है।
12. संस्कृति संयमी होती है।
13. संस्कृति मे एकीकृत होने का गुण पाया जाता है।

मरडॉक ने संस्कृति की निम्नलिखित विशेषताएं बतायी:

1. संस्कृति सीखी जाती है।
2. हस्तान्तरित होती है, सामाजिक होती है।
3. एक आदर्श के रूप में होती है।
4. प्रसन्नतादायक होती है।
5. अनुकूलन की क्षमता होती है।
6. समन्वयकारी होती है।
7. अधिवैयक्तिक, अधिसावयवी होती है।
8. आवश्यकताओं की पूर्ति का आधार होती है।

संक्षेप मे

- संस्कृति अतीत से संबद्ध होती है।
- संस्कृति सामाजीकरण आदतों एवं विचारो द्वारा सीखे गये सामाजीकृत व्यवहार होती है।
- संस्कृति मे आदर्श, नियम व विचारों का समावेश होता है।
- यह भाषा के माध्यम से अतीत मे सीखे गये व्यवहारों को हस्तान्तरित करती है तथा श्रम विभाजन द्वारा अन्योन्याश्रितता मे वृद्धि करती है।

संस्कृति और सभ्यता

संस्कृति और सभ्यता मे सबसे पहले अन्तर "**अल्फ्रेड वेबर**" ने किया।

ऐतिहासिक मीमांसा यह है कि सभ्यता का आरंभ लेखन व धातु के आविष्कार से संबद्ध है।

ऑगबर्न व निमकॉफ: सभ्यता अति जैविक (Super Organic) संस्कृति का उत्तरीय पक्ष है।

ब्रुक्स एडम्स : सभ्यता शासकीय सत्ता की स्थिर व्यवस्था पर आधारित है।

सभ्यता अनिवार्य रूप से अति विकसित संगठन है। (Modern Concept)।

जिलिन व जिलिन: सभ्यता संस्कृति का अधिक जटिल व विकसित रूप है। 'संस्कृति शब्द मूर्त विचारो मे अभिलक्षित विचारों, प्राविधियों का बोध कराने हेतु प्रयोग किया जाता है। जबकि स्वयं वस्तुओं का बोध कराने हेतु सांस्कृतिक उपकरण शब्द

NET, JRF Manish Singh EG Cla

का प्रयोग किया जाता है।'

A.W. Green: संस्कृति उसी समय सभ्यता बनती है जब यह लिखित भाषा, विज्ञान, दर्शन, विशिष्ट श्रम विभाजन व एक जटिल प्रौद्योगिकी एवं राजनैतिक प्रणाली को ग्रहण कर लेती है। इस प्रकार सभ्यता शब्द का प्रयोग संस्कृति के कुछ चयनित भागों के लिए किया जाता है।

MacIver and Page: सभ्यता शब्द का प्रयोग उपयोगी वस्तुओं, जीवन की आवश्यकताओं को नियंत्रित करने के लिए मानव द्वारा योजित समस्त संगठन तथा यांत्रिकता के लिए किया गया है।

इन्होने सभ्यता व संस्कृति मे निम्न अंतर बतलाए: (ये अंतर संस्कृति के मूर्त व अमूर्त अवधारणा पर आधारित हैं)।

1. सभ्यता का परिमाणात्मक मापन संभव है जबकि संस्कृति का नहीं।

eg: मोटर गाड़ी बैल गाड़ी से श्रेष्ठ है, जबकि सांस्कृतिक वस्तुओं की सापेक्षता मापन का कोई यंत्र नहीं है।

2. सभ्यता में निरंतर प्रगति होती है परंतु संस्कृति में नहीं।

3. सभ्यता सरेखीय व संचयात्मक होती है इसकी दिशा लगातार उदग्र होती है और अनिश्चित काल तक चलती है, वहीं संस्कृति शनै: शनै:।

4. सभ्यता प्रयास के बिना आगे बढ़ जाती है जबकि संस्कृति नहीं।

5. सभ्यता का स्थानान्तरण उत्पादको के बिना निर्माणक्षमता के कर सकते हैं-TV Mobile, Radio, etc.

जबकि संस्कृति का सिद्धांत आत्मसात पर आधारित है।

6. सभ्यता वाह्य एवं यांत्रिक है। संस्कृति आंतरिक एवं जैविक है।

eg: नैतिक विचार, मूल्य, आदर्श, मानदंड इत्यादि।

MacIver & Page: जो कुछ हम है वह संस्कृति है, जो कुछ हमारे पास है वह सभ्यता है।

अत: संस्कृति का अभिप्राय चेतना अथवा आत्मा की आंतरिक अवस्था से है, वाह्य परिस्थितियो से नहीं।

7. सभ्यता को बिना परिवर्तन, हानि के बिना ग्रहण कर सकते हैं, परंतु संस्कृति को नहीं।

8. सभ्यता का विस्तार अधिक शीघ्रता, अधिक सरल रीति से, कम वरणात्मक होता है, तथा यह प्रौद्योगिकी केन्द्र से बाहर की ओर प्रसारित होती है।

eg: नील नदी की सभ्यता।

9. संस्कृति का अपना आन्तरिक गुण होता है केवल कुछ सांस्कृतिक गुणो को उधार लिया जा सकता है।

eg: कोई भी जाति अपनी संस्कृति को पूर्णतया त्याग नहीं सकती क्योंकि ऐसा करना उसकी मौलिक विशेषता को नष्ट कर देता है।

10. संस्कृति और सभ्यता मे अन्योन्याश्रितता का गुण पाया जाता है।

यह अन्त:क्रियाशील भी होती है।

11. संस्कृति का सम्बंध साध्य से होता है और ये मूल्योन्मुख (Value-oriented) होती है। जबकि सभ्यता का संबंध साधनो से (वर्हिमुखी एवं उपयोगिता वादी) होता है।

12. सभ्यता मूलक उपकरणों की उपलब्धि हमारी सांस्कृतिक अभिरूचि पर निर्भर होती है अत: संस्कृति का आधार मूल्यात्मक होता है।

मैलिनॉस्की: संस्कृति, सभ्यताओ की पूर्ति के लिए उपयुक्त साधन है।

मीड: संस्कृति मानव के समस्त व्यवहार का प्रस्तुतीकरण है।

गिडिंस व आगबर्न: गिडिन्स व आगबर्न जैसे समाजशास्त्रियों ने संस्कृति के

NET, JRF Manish Singh EG Cl

अन्दर भौतिक व अभौतिक दोनो पक्षों को शामिल किया है।

- आगर्बन जिसे अभौतिक संस्कृति कहते है उसे मकीवर व पेज ने 'सभ्यता' कहा है।
- जर्मन समाजशास्त्री सभ्यता व संस्कृति को अलग-अलग समझते हैं। जबकि फ्रांसीसी दोनो में अन्तर नहीं करते।
- ब्रिटिश समाजशास्त्रियों मे टायलर ही ऐसे हैं जिन्होने सभ्यता व संस्कृति में अन्तर नहीं किया है। इनके अनुसार मानव की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के सभी साधन संस्कृति व सभ्यता है, इसके अंतर्गत मानव निर्मित सभी भौतिक वस्तुएं भी शामिल है।

टायलर द्वारा दी गयी संस्कृति की अवधारणा को **क्रोबर व क्लूखान** ने **"वृहद संस्कृति"** की संज्ञा दी है। जॉनसन ने भौतिक संस्कृति को संस्कृति मानने की अवधारणा का विरोध किया है, जॉनसन ने कहा कि सिर्फ मानव द्वारा सीखा गया व्यवहार ही संस्कृति है, भौतिक वस्तुएं इस्तेमाल के साथ समाप्त हो जाती हैं, संस्कृति समाज में संचय होती हैं, यह समाज को जीवन्तता प्रदान करती है।

- मानव निर्मित भौतिक वस्तुएं संस्कृति की उपज हैं वे अपने आप में संस्कृति नहीं है।
- भाषा संस्कृति का अंग है पर पुस्तके नहीं।
- संस्कृति सीखी जाती है।मोटर गाड़ी सीखी नहीं जाती वह शिल्प तथ्य है। मोटर गाड़ी चलाना सीखना संस्कृति है।
- संस्कृति मस्तिष्क की अमूर्त अवधारणा का नाम है। लियोनार्डो द विंची की मोनालिसा संस्कृति नहीं है। बल्कि यह सांस्कृतिक धरोहर है।
- भौतिक संस्कृति को संस्कृति नहीं माना जाता क्योंकि इसे एक साथ कई लोग इस्तेमाल नहीं कर सकते। जबकि संस्कृति को एक साथ बहुत से लोग इस्तेमाल कर सकते हैं। जैसे-भाषा, धर्म।
- संस्कृति जीवित या मृत हो सकती है। जैसे भारत में प्राकृत भाषा, यूरोप में लैटिन भाषा मृत हो चुकी है इसे पुन: उसी रूप में जीवित किया जा सकता है, इसीलिए संस्कृति मे अमरता का गुण होता है, सभ्यता मे नहीं।
- चंदन लगाना, टीका लगाना, जनेऊ पहनना संस्कृति नहीं है बल्कि यह जिन आदर्शों, मूल्यों के कारण हो रहा है वह संस्कृति है। अत: कोई व्यवहार संस्कृति नहीं बल्कि सांस्कृतिक कहा जाता है।

संस्कृति के आधारभूत तत्व

लेविस जे.कार ने संस्कृति के उन मूलभूत तत्वो पर प्रकाश डाला जो सभी संस्कृतियों मे पाये जाते हैं।

1. भाषा
2. भौतिक तत्व व वस्तुएं
3. सामंजस्य प्रतिमान (बाध्यता मूलक प्रतिमान, संगठनात्मक, वाह्यता मूलक प्रतिमान)
4. मूल्य व आदर्श
5. प्रकार्यों की अन्तनिर्भरता।

NET, JRF Manish Singh EG Cla

मेटा स्पेन्सर (Metta Spencer) **ने संस्कृति के निम्न तत्वो पर प्रकाश डाला:**

1. प्रतीक
2. मूल्य
3. मानदण्ड
4. लोक साहित्य (Folk lore)
5. कानून (Law)
6. विचारधारा (Ideology)

स्पेन्सर (Spencer) ने सामाजिक संस्थाओं के उद्विकास की विवेचना मे लिखा है कि मनुष्य की जीविका के लिए आर्थिक आवश्यकताएं सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है। इसी प्रकार मानव संस्कृति के विभिन्न रूप परिलक्षित होते हैं जो इस प्रकार है:

1. संग्रहण की अवस्था
2. शिकार की आवस्था
3. पशुपालन की अवस्था
4. चारागाह की अवस्था
5. कृषि की अवस्था
6. कुटीर उद्योग की अवस्था
7. औद्योगिक अवस्था।

संस्कृति का वर्गीकरण

क्रोबर : भौतिक, अभौतिक

आगबर्न: भौतिक, अभौतिक

गुडे: भौतिक (मूर्त), अभौतिक (अमूर्त भावानात्मक)

सोरोकिन: चेतनात्मक, विचारात्मक, आदर्शात्मक

मेल्विन ट्यूमिन: 3 प्रकार-

भौतिक, अभौतिक, अर्द्धभौतिक

मार्गन ने उद्विकासीय आधार पर संस्कृति को तीन भागो में बांटा:

1. जंगली अवस्था
2. बर्बर अवस्था
3. सभ्य अवस्था

टॉयलर ने धर्म को संस्कृति का महत्वपूर्ण पक्ष माना व धर्म का उद्विकासीय सिद्धांत मत रखा:

1. आत्मावाद (जीववादी बहुदेववाद)
2. बहुदेववाद (उन्नत बहुदेववाद)
3. एकेश्वरवाद

हेड्डन ने कला के सम्बंध में उद्विकासीय मत रखा:

1. यथार्थवादी कला
2. रेखाकार
3. प्रतीकात्मक या अमूर्त

लेवी ब्रूहल ने आधुनिक तर्क का विकास आदिम तर्क से माना ब्रूहल ने

NET, JRF Manish Singh EG Cl

आदिम अवस्था को तर्क पूर्व मन:स्थिति कहा।

S.C. Dubey:

1. आदि पाषाणकाल
2. पुरापाषाण काल
3. नवीन पाषाणकाल
4. ताम्र युग
5. कांस्य युग
6. लौह युग

राल्फ लिंटन ने अपनी पुस्तक The Study of Man (1964) **मे संस्कृति के चार प्रकारो की चर्चा की:**

1. संस्कृति निर्माणक (Cultural Construct)
2. सांस्कृतिक सार्वभौम (Cultural Universals)
3. सांस्कृतिक विकल्प (Cultural Alternatives)
4. सांस्कृतिक विशेषताएं (Cultural Specialities)

- लिंटन ने संस्कृति की सबसे छोटी इकाई को **संस्कृति विशेषक या तत्व** (Cultural Trait) कहा।
- स्टीवर्ड ने बहुमांगी (बहुमार्गी) विकासवाद और संस्कृति के क्रमिक विकास का समर्थन किया। जबकि लेस्ली व्हाइट ने संस्कृति को प्रतीकात्मक, निरंतर संचयी व विकासात्मक प्रक्रिया माना।

लेस्ली व्हाइट को - नवविकासवाद व संस्कृतिवाद का प्रवर्तक माना जाता है।

- क्रोबर व क्लूखॉन ने 108 परिभाषाओं (संस्कृति की) का संकलन किया।

भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएं:

1. प्राचीनता
2. धर्म की प्रधानता।
3. अध्यात्मवादी दर्शन
4. समन्वय की भावना/वृद्धि
5. विभिन्नतावादी दर्शन
6. वर्ण, आश्रम, पुरुषार्थ व संस्कार की एक व्यवस्था
7. संयुक्त परिवार की व्यवस्था
8. सुदृढ़ता पर आधारित व्यवस्था

नोट: टायलर और **फ्रेन्ज बोआस** ने सामाजिक तत्वों के आधार पर संस्कृति का अध्ययन किया।

संस्कृति के प्रमुख घटक इस प्रकार है

1. प्रौद्योगिकी
2. आर्थिक संगठन
3. सामाजिक संगठन
4. राजनैतिक संगठन
5. विचारधारा
6. विश्वास, मान्यता, आदर्श
7. कला
8. भाषा

प्रत्येक संस्कृति तत्व का अपनी उत्पत्ति के सम्बंध मे एक इतिहास होता है। सांस्कृतिक तत्व, संस्कृति की भांति स्थिर नहीं बल्कि गतिशील होते है। सांस्कृतिक तत्वो में मिलकर रहने की प्रवृत्ति पायी जाती है।

संस्कृति के उपादान (Components of Culture):

NET, JRF Manish Singh EG Cla

समाजशास्त्री संस्कृति के निर्माणात्मक अंगो को संस्कृति के उपादान कहते हैं। जो इस प्रकार हैं:

विसलर (1917) ("Man and Culture"-Book) ने अमेरिका की इंडियन संस्कृति का अध्ययन कर संस्कृति के निम्न अंगो को उल्लेख किया है:

1. संस्कृति तत्व
2. संस्कृति संकुल
3. सांस्कृतिक क्षेत्र

सांस्कृतिक तत्व (Cultural Trait) सांस्कृतिक विशेषक)

भौतिक संस्कृति में सबसे छोटी इकाई जिसका विभाजन नहीं किया जा सकता, विभाजित करने पर वह अपना अस्तित्व खो देता है।

अभौतिक संस्कृति में भी संस्कृति का सबसे छोटा हिस्सा। जैसे विचार, प्रतीक, विश्वास तत्व है।

नोट:

- हिन्दू संस्कृति की आत्मा: धर्म
- इस्लाम संस्कृति की आत्मा: भ्रातृत्व
- इसाई संस्कृति की आत्मा: मानवता है।

संस्कृति/सांस्कृतिक संकुल (Cultural Complex) : संस्कृति तत्वो के अर्थ पूर्ण संकलन को सांस्कृतिक संकुल कहते हैं।

- सांस्कृतिक तत्व आपस मे घुल मिलकर मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। ऐसे सांस्कृतिक तत्वो के योग को संकुल कहते हैं।
- **डा. एस.सी. दूबे** ने लिखा है कि सामाजिक (सांस्कृतिक) तत्वों को हम संस्कृति के गठन मे सरलतम व्यावहारिक इकाई मान सकते हैं।
- **हर्षकोविट्ज** : तत्व को एक निर्दिष्ट संस्कृति मे पहचानी जाने वाली सबसे छोटी इकाई मानते हैं।
- **क्रोबर:** सांस्कृतिक तत्व को संस्कृति का अल्पतम परिभाषित तत्व मानते हैं।
- संस्कृति तत्व संस्कृति की सबसे छोटी इकाई है। अनेक संस्कृति तत्वो का जब परस्पर अर्थ पूर्ण ढंग से संयोग होता है तो **संस्कृति संकुल** (Cultural Complex) का निर्माण होता हैं।
- जब संस्कृति संकुल, संस्कृति को विशेष स्थिति प्रदान करते हैं तो वे **सांस्कृतिक प्रतिमान** (Cultural Pattern) कहलाते हैं, जब एक सांस्कृतिक प्रतिमानो का निश्चित सीमा तक विस्तार होता है, वह (सीमा) संस्कृति क्षेत्र कहलाता है।
- **क्लार्क विसलर ने 9 आधारभूत संस्कृति तत्वों का उल्लेख किया हैं वहीं किम्बाल यंग ने 13 का।**
- **बिली** ने संस्कृति संकुल (Complex) की व्याख्या के लिए फुटबाल क्लब का उदाहरण दिया है।

  फुटबाल का खेल एक Complex है तो फुटबाल, खिलाड़ी रेफरी आदि संकुल है।
- तत्व भौतिक, अभौतिक दोनो होते हैं।
- संस्कृति संकुल कोई संस्था नहीं है, बल्कि यह कई संस्थाओं के मध्य अन्त:क्रिया का परिणाम है।
- नागालैण्ड के कतिपय नागा समूहों में नरमुंड प्राप्ति की धार्मिक सामाजिक क्रिया अनेक संस्कृति तत्वो के एकीकरण से एक विशिष्ट सांस्कृतिक संकुल का उदाहरण है।

ईथास एवं ईडास (संसाध्य एवं सम्मूर्त्य पक्ष) (Ethos & Edos): **क्रोबर**

क्रोबर ने संस्कृति के दो पक्षो पर ध्यान दिया है।

NET, JRF Manish Singh PG Cl

Edos : संस्कृति के रचना तत्वों से प्रकट होने वाला इसका औपचारिक व्यक्त रूप इडास है।

Ethos : संस्कृति का वह क्रिया साध्य है, जो इसके गुण इसकी प्रेरक मान्यताओं (थीम्स) और इसकी अभिरुचियों को निर्धारित करता है।

Edos संस्कृति का वाह्य पक्ष है जबकि Ethos संस्कृति का आन्तरिक पक्ष है।

Explicit & Implicit **(अभिहित और निहित पक्ष/तत्व): क्लूखाँन**

Explicit: आंख व कान की सहायता से संस्कृति के जिन लक्षणों/यथार्थताओं का प्रत्यक्षण/देखा किया जा सकता है उन्हें संस्कृति का Explicit तत्व कहा जाता है।

Implicit : संस्कृति मे कुछ ऐसे तत्व भी होते हैं जिनका प्रत्यक्षण (देखना) किसी विशेष प्रशिक्षण (Training) के पश्चात ही किया जा सकता है, क्योंकि ये तत्व मानव व्यवहार में निहित अभिप्रेरको एवं मनोवेगो के रूप में होते हैं जिनसे कर्ता स्वयं भी प्राय: अवगत नहीं होते। इन्हें संस्कृति के निहित तत्व कहा जा सकता है।

संस्कृति निर्धारणवाद: लेस्ली व्हाईट

जब दो संस्कृतियां मिलती हैं तब निर्धारण की प्रक्रिया शुरु होती है।

इस अवधारणा के अंतर्गत दो अवधारणाओं का समावेश है:

1. नृजाति केन्द्रता
2. सांस्कृतिक सापेक्षवाद

- सांस्कृतिक निर्धारण वादियों के अनुसार: न केवल आर्थिक संगठन अपितु स्वयं समाज भी संस्कृति से उत्पन्न होता है।
- टायलर ने कहा कि समाज का सदस्य होने के नाते मनुष्य को संस्कृति प्राप्त होती है किन्तु संस्कृति निर्धारणवादी इसका विरोध करते हैं।
- संस्कृति निर्धारणवादियो के अनुसार संस्कृति अन्य सभी संस्थाओं की आधात्री (आधार) होती है और संस्कृति की वृद्धि व क्रियाशीलता, संस्कृति के अपने ही नियमो से संचालित होती है।
- क्रोबर का नाम लम्बे समय तक इससे जुड़ा रहा लेकिन आगे चलकर क्रोवर ने इस दृष्टिकोण को बदल दिया।
- निर्धारणावादियों (संस्कृति निर्धारणवादियो) के अनुसार संस्कृति Super Organic है। यह दृष्टिकोण परा जैविक ही नही, परा मानसिक व परा सामाजिक भी है।
- Super Organic **शब्द का प्रयोग संस्कृति के सम्बंध मे सबसे पहले क्रोवर ने ही किया था।**

संस्कृति और व्यक्ति

- परंपरानुसारी (परम्परा को मानने वाले) व्यक्तियों के लिए संस्कृति की भूमिका निर्देशक की होती है।
- यदि व्यक्ति समाज से लाभ लेना चाहता है तो उसे भी समाज को इसका मूल्य देना पड़ता है, यह मूल्य व्यक्ति अपनी स्वतन्त्रता का त्याग करके देता है, वह अपने व्यवहार को संस्कृति के अनुरुप ढालता है।
- लेकिन अपरम्परानुचारी व्यक्तियों के लिए संस्कृति ऐसा वातावरण है जिसके अंदर वे अपने नये विचारों का परीक्षण करते है। वे संस्कृति विरोधी नहीं होते बल्कि सुधारवादी होते हैं।

  इन अपरम्परानुचारी व्यक्तियों को टायनावी ने 'सृजनशील अल्पसंख्यक' व बर्गसाँ ने 'रहस्यवादी' कहा।

  eg: महात्मा गांधी, बुद्ध
- सृजनशील अल्पसंख्यक का सिद्धांत सिर्फ इतना ही कहता है कि अपरम्परानुकरण

NET, JRF Manish Singh EG Cla

नकारात्मक नहीं बल्कि सकारात्मक होता है।

- **यह 'कार्लाइल' के इस सिद्धांत का समर्थन नहीं करता कि 'जन नायक इतिहास निर्माता होते हैं।'**

सांस्कृतिक वृद्धि (Cultural Growth): सांस्कृतिक विचारकों के पास प्रारंभ से ही दो यक्ष प्रश्न खड़े रहे हैं:

1. संस्कृतियों का जन्म कैसे हुआ।
2. विभिन्न संस्कृतियों में एक जैसे सांस्कृतिक विशेषकों व सांस्कृतिक संकुलो का निर्माण कैसे हुआ।

इन प्रश्नो के उत्तर के रूप में हमारे सामने तीन प्रकार के विचार आते हैं:

1. सांस्कृतिक विकासवाद
2. सांस्कृतिक प्रसारवाद
3. पर संस्कृति ग्रहण

1. **विकासवाद (उद्विकासवाद):**

- सांस्कृतिक विकासवाद की अवधारणा **चार्ल्स डार्विन** के प्राणिशास्त्रीय विकासवाद पर आधारित है।
- **टायलर** विकासवाद व सामाजिक संस्थाओं के विकासवाद के जन्मदाता भी माने जाते हैं।
- टायलर, मार्गन, हेड्डन आदि विकासवादियों के विचार पीछे के पृष्ठों पर दिया गया है।
- **मार्गन, टायलर** विकासवाद के **एकमार्गी सिद्धांत** के प्रवर्तन के समर्थक हैं।
- उद्विकास एकरेखीय व बहुरेखीय दोनो होता है।
- विकासवाद इस मान्यता पर आधारित है कि **'मानसिक बनावट की दृष्टि से मनुष्य सर्वत्र एक सा है।'**

  इस विचार को **'मानव जगत की मानसिक एकता कहते हैं।'**
- यदि दो संस्कृतियों में एक जैसे विशेषक व संख्याएं देखी जाती हैं तो इस **समाभिमुखी उद्विकास** (Convergent Evolution) कहा जाता है।
- यदि विशेषक व संस्थाएं दोनो संस्कृतियो में अलग-अलग हैं तो इसे Divergent Evolution कहा जाता है।

कई लेखकों ने आगे चलकर विकासवाद का संशोधित रूप प्रस्तुत किया इसे **'परवलयिक वक्रता' या** (Parabolic Curve Theory) कहते हैं।

इसका अर्थ है कि एक संस्था का विकास प्रारंभ में एक रूप में होता है आगे चलकर एक स्थिति में यह विकास प्रारंभ के ठीक विपरीत रूप में हो जाता है लेकिन यह विपरीत स्थिति प्रारंभ की स्थिति से उन्नत व नयी होती है।

प्रसादवाद (Diffusion) : प्रसार शब्द का अर्थ मानवशास्त्र में किसी भी तत्व का एक बिन्दु/स्थान से सभी दिशाओं मे प्रसार से है। **प्रसार मानव की 'आविष्कार क्षमता' से सम्बंधित है।**

प्रसार का सिद्धांत उद्विकास सिद्धांत की प्रतिक्रिया का परिणाम है। **प्रसारवादी सिद्धांत द्वारा:**

1. सांस्कृतिक समानता
2. परस्पर संबद्धता
3. सांस्कृतिक तत्व
4. सांस्कृतिक अवलम्बन
5. सांस्कृतिक क्षेत्र
6. सांस्कृतिक वृत्त (Kulture Kreise) आदि अवधारणाओं की सुष्पस्ट व्याख्या की गयी।

NET, JRF Manish Singh EG Cl

प्रवारवाद के विभिन्न संप्रदाय:

1. **ब्रिटिश प्रसारवाद: (मिश्रवादी)**

(i) W.E. Smith
(ii) W.J. Perry
(iii) W.H.R. Riverse

टायलर ने सबसे पहले प्रसार के महत्व की चर्चा की। टायलर ने सभ्यता को एक ऐसे पौधे की उपमा दी जिसे भिन्न-भिनन स्थानो पर न उगाकर एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया गया है।

eg: टायलर ने उदाहरण मे मेडगास्कारी धौंकनियों का उल्लेख किया, टायलर के अनुसार इन्हें पूर्व से लाया गया।

लेकिन अंग्रेज (ब्रिटिश) प्रसारवादी शब्द का उल्लेख, इलियट स्मिथ, W.J. Perry ने उनके अनुयायियों के लिए ही प्रयुक्त किया जाता है न कि टायलर के लिए।

इनके विचार प्रसारवाद के सबसे अन्तिम विचार रहे, इनके बारे में कहा जाता है कि: 'विश्व रंग मंच पर आने वाले प्रसारवादियों मे ये अन्तिम थे लेकिन विलुप्त होने वालो में प्रथम।'

पेरी, स्मिथ, रिवर्स आदि ने 'विश्व सांस्कृतिक अवलम्बन' का अध्ययन किया। इन्होंने मिश्र सभ्यता का अध्ययन किया, इसलिए इन्हे मिश्रवादी भी कहते हैं। (Egyptologist)

ब्रिटिश प्रसारवादियों ने मिश्र सभ्यता के अध्ययन में सूर्य उपासना (Holiolithica) सिद्धांत प्रस्तुत किया।

प्रमुख मान्यताएं

1. मिश्र से ही सभी संस्कृतियों का विकास हुआ।
2. पेरी ने मिश्रवासियों को **'सूर्य पुत्र'** कहा। तथा बताया कि मिश्रवासी ही विश्वसभ्यता के अग्रणी व कर्णधार रहे हैं।
3. इन्होंने मिश्र को **'संपूर्ण मानव सभ्यता का पालना'** कहा।
4. **पेरी, स्मिथ का मानना था कि** 'मनुष्य स्वभाव से ही अत्यधिक कल्पनाशील व अन्वेषणशील प्राणी नहीं है।'
5. जिस समूह ने मिश्र की सभ्यता का अनुपालन नहीं किया (अनुकूलन नहीं किया) उन्हें ये प्राकृतिक मानव कहते हैं। इनमे नकारात्मक तत्वो की समग्रता पायी जाती है। जैसे: वस्त्र न पहनना, अविवाहिकता- **स्मिथ**

- **विलियम जेम्स पेरी:** Book
  1. The Children of the Sun (मलाया)
  2. God and Men

पेरी: सभ्यता का हस्तान्तरण सदैव निम्नतर स्तर से होता है।

पेरी ने : संस्कृति संकुलो मे समग्रता एवं असमानताओं का स्थानान्तरण योग क्षति (Loss),

सांस्कृतिक तत्वो का समिश्रण, आदि अवधारणाएं प्रतिपादित की।

- **डब्लू. एच. आर. रिवर्स:** Book: The History of Melanassian Society

संस्कृति का प्रसार मेलेनेशियन तथा पोलेनेशियन मूल संस्कृति संकुल से ही हुआ है।

रिवर्स का तर्क है कि मेलेनेशियन के बीच डोंगी (नाव) हस्तकला विलुप्त हो गयी। आस्ट्रेलिया मे प्रचलित स्थानान्तरण से डोंगियों द्वारा मानवो (पुरुषों) का आगमन हुआ, पुरुषों ने स्थानीय स्त्रियों से विवाह कर लिया, स्थान्तरित पुरुषों की स्थानीय

NET, JRF Manish Singh EG Cla

विशेषताएं विलुप्त हो गयीं, संतानो ने मातृभाषा माँ की ही सीखी। मेजबान (पोलेनेशियन) की संस्कृति को आत्मसात कर लिया गया।

संस्कृति चक्र सिद्धांत या जर्मन प्रसारवाद: (संस्कृति-इतिहासात्मक सिद्धांत)

Kultur Kreise = संस्कृतिक चक्र या वृत्व या प्रखंड

फ्रैड्रिक रेट्जेल - संस्थापक

ग्रेवनर (फिट्ज़ ग्रेवनर)

स्मिथ (फादर विल्हेम स्मिथ)

एंकरमेन

- बहुरेखीय/बहुस्वरूपीय सांस्कृतिक विकास के समर्थक।
- जर्मन प्रसारवादी यह मानते हैं कि संस्कृति संकुलों का विकास विभिन्न कालों मे अलग-अलग जगहों पर हुआ, फिर ये प्रसारित होकर विभिन्न स्थानो पर पहुंचते रहे हैं। ऐसा प्रसार एक क्रमिक परतों मे होता है, क्योंकि प्रसारित संस्कृति विशेषकों (तत्वों) की परते दूसरी संस्कृति मे देखी जा सकती हैं।
- **ग्रेवनर ने मात्रा** (Quantity) **व आकार** (Form) की कसौटी का विकास कर एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। ग्रेवनर का तर्क है कि प्रसार को सिद्ध करने के लिए मात्र ऐतिहासिकता का तर्क पर्याप्त नहीं है बल्कि संस्कृति विशेषकों (तत्वो) मे आकार की समानता, संख्या की समानता, व रचना तत्वो (संस्कृति विशेषकों/संकुलो) की भी जांच की जानी चाहिए।

eg: यदि हमे देखना है कि राशि चक्रों का प्रसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर हुआ है कि नहीं तो हमें यह देखना पड़ेगा की दोनो जगहों पर राशि चक्रों के चिन्ह समान है कि नहीं अगर वे समान हैं भी तो इनकी संख्या समान है कि नहीं साथ ही यह भी देखना पड़ेगा की चिन्हों को घड़ी की सीधी या उल्टी दिशा में देखा जाता है।

- **फादर विल्हेम स्मिथ** जर्मन प्रसारवाद के उप जर्मन संप्रदाय के **'वियना' स्कूल** के संस्थापक माने जाते हैं।
- **मातृवंशीय-उधान-उद्विकासीय योजना: फ्रादर विल्हेम स्मिथ**

इस योजना के अनुसार स्त्रियों में शिकार व खाधान्न संकलन स्तर पर जंगली पौधों के संकलन की प्रवृत्ति ने उद्यान आविष्कार की ओर प्रेरित किया। अत: स्त्रियां ही संपूर्ण उत्पादन, भू-स्वामित्व के लिए अधिकृत थीं।

स्त्रियां: खाद्य व संग्राहक अवस्था-शिकार नहीं करती थी Fig

- स्त्रियां फल-फूल, कंदमूल संग्रहण का काम करती थीं।
- अत: उन्ही ने पौधो की पहचान की जिसे आविष्कार कहा जाता है।

पौधो की पहचान (आविष्कार)

(पौध रोपण, संरक्षण उधान)

पौधे जीमन पर लगाए गये

भू-स्वामित्व, उत्पादन-आधिपत्य-स्त्रियों के पास ही रहा।

- **अमेरिकन प्रवारवाद** (American Digfussionist): **'फ्रेज बोआस', क्लार्क विसलर**

अमेरिकन प्रसारवादियों ने प्रसारवाद की प्रक्रिया को संस्कृति क्षेत्र, आयुक्षेत्र, संस्कृति केन्द्र, संस्कृतिचरम बिन्दु, आहार क्षेत्र (Food Area) के माध्यम से समझने का प्रयास किया।

बोआस ने प्रश्न खड़ा किया कि प्रसार क्यों होता है।

Cultural Area: जिसे बोआस ने निश्चित क्षेत्र कहा उसी को **विसलर** ने सांस्कृतिक क्षेत्र कहा।

विसलर ने बतलाया कि कोई भी संस्कृति विशेषक विशेषतया अभौतिक संस्कृति

NET, JRF Manish Singh EG Cla

विशेषक-रास्ते में क्षीण हुये बिना लम्बी दूरियां तय नहीं कर सकते। यह क्षीणता दो तरीको से आती है।

1. कुछ अपने तत्वों के क्षय से
2. तथा कुछ अपने से भिन्न तत्वों के साथ संसर्ग/मिश्रण से पैदा होती है।

विसलर ने बतलाया कि प्रत्येक संस्कृति क्षेत्र जिसके अन्दर कई संस्कृति संकुल होते हैं, मे एक केन्द्रीय विसरण बिन्दु का पता लगाया जा सकता है, साथ ही वे सीमाएं भी दिखायी जा सकती हैं जहां पहुचतें-पहुंचते संस्कृति संकुल अत्यन्त क्षीण हो जाती है। इस सीमा पर अस्पष्ट, किन्तु दूसरी संस्कृति का प्रभाव महसूस किया जा सकता है।

विसलर ने यह भी बतलाया कि लंबी दूरियां, पर्वत, समुद्र, रेगिस्तान आदि संस्कृति प्रसार में अवरोधक होते हैं।

दो संस्कृति क्षेत्रों की सीमाओं पर रहने वाले लोग दोनो प्रकार के जीवन का सम्मिश्रण प्रदर्शित करते हैं, ऐसे क्षेत्रों को **सीमांत क्षेत्र** (Marginal Area) कहा गया है।

जिन भौगोलिक क्षेत्रों की वस्तुओं (भौतिक-अभौतिक) में समानता पायी जाती है उन्हें सांस्कृतिक क्षेत्र कहते हैं।'

eg: सिंधु घाटी की सभ्यता, अवध, बुंदेलखण्ड, राजस्थानी संस्कृति

सांस्कृतिक केन्द्र (Culture Centre): जहां से संस्कृति का प्रसार होता है यहां सांस्कृतिक विशेषक व संकुल सबसे अधिक घनी मात्रा मे पाए जाते हैं इसे **'क्रोबर'** ने "Culture Climax" कहा।

क्रोबर:'संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा अमेरिकी प्रसारवादियों के लिए सामुदायिक प्रस्तुतीकरण है।

विसलर ने 6 सांस्कृतिक क्षेत्रो व 84 उप क्षेत्रों का उल्लेख किया है।

माखन झा: Social Anthropology (कैलिफोर्निया) का अध्ययन कर 430 संस्कृति तत्वों का उल्लेख करते हैं।

- हर्षकोविट्ज ने अफ्रीका मे 9 सांस्कृतिक क्षेत्रो का उल्लेख करते हैं।
- सांस्कृतिक क्षेत्रों तथा उत्पादन क्षेत्रों के सह सम्बंधो का अध्ययन भी विसलर ने ही किया।
- विसलर पहले अमेरिकी प्रसारवादी थे जिन्होंने संस्कृति एवं आहार क्षेत्र (उत्पादन केन्द्र) के विषय को स्पष्ट किया।
- **आहार क्षेत्र:** एक जैसे सदस्य सांस्कृतिक तत्वो के कारण उत्पादन प्रणाली भी एक जैसी होती है।
- सांस्कृतिक क्षेत्र के अंतर्गत सांस्कृतिक केन्द्र होता है जहां से समस्त गतिविधियों को नियंत्रित एवं संचालित किया जाता है।
- सांस्कृतिक केन्द्र से सांस्कृतिक तत्वो का निरंतर विसरण होता रहता है।
- सांस्कृतिक तत्व ऐतिहासिक कालावधि में विकसित होते हैं।
- **विसलर ने क्षेत्र की अवधारणा अमेरिकन इंडियन्स के अध्ययन से विकसित की थी।**
- **एच. जे. स्टीवर्ट: सांस्कृतिक वर्गीकरण के लिए** Cultural Taxonomy **शब्द का प्रयोग किया।** Cultural Taxonomy से सांस्कृतिक क्षेत्र को निर्दिष्ट किया जाता है।
- **लेस्ली व्हाइट:** लेस्ली व्हाइट ने सांस्कृतिक उद्विकास का तकनीकि आधार पर विलेषण किया।

संस्कृति: Fig

आदर्शातमक पक्ष (उच्चस्तर): विश्वास व नीति

सामाजिक पक्ष: विवाह व नातेदारी

तकनीकि पक्ष: उपकरण व यंत्र

NET, JRF Manish Singh EG Cla

भावनात्मक पक्ष (निम्न स्तर): Taboo व Totem

- **ब्रिटिश प्रसारवादी :** सबसे अन्त में स्थापित प्रसारवाद
  1. W.E. Smith
  2. W.J. Perry
  3. W.H.R. Riverse
- **अमेरिकन प्रसारवादी:**

  फ्रेंज बोआस

  विसलर

  मेसन

  क्रोबर,

  डिक्सन,

  लेस्ली व्हाईट
- **जर्मन प्रसारवादी:**

  फ्रैड्रिक रेट्जेल: संस्थापक

  ग्रेवनर

  स्मिथ

  एंकरमेन

पेरी ने मलाया वासियों के सामाजिक संगठनो पर क्षेत्रीय कार्य किया और

1. The Children of the Sun
2. God and Men पुस्तके लिखी। इसमे पेरी ने अलौकिक शक्तियों की अवधारणा प्रस्तुत की।

फादर विल्हेम स्मिथ:स्त्रियों की संपत्ति के उत्तराधिकारी बहनों के पुत्र होने के कारण पुरुषत्व मात्राधिकार कहलाता है।

इसका मौसी की संपत्ति पर अधिकार होगा। पुरुषत्व-मातृधिकार।

परसंस्कृतिग्रहण (Acculturation): जब संस्कृति विशेषक या संकुल प्रसारित होते हैं तब इस प्रक्रिया को हम **प्रसार** (Diffussion) कहते हैं। किंतु जब एक संस्कृति के प्रभाव से दूसरी संस्कृति की संपूर्ण जीवन पद्धति परिवर्तन के दौर मे होती है तब इसे परसंस्कृतिग्रहण कहते हैं।

हर्षकोविट्ज

1. जब एक बढ़ता हुआ बच्चा अपनी ही संस्कृति का अनुपालन सीखता है तो इसे **संस्कृति अन्तःकरण** (Enculturation) कहते हैं।
2. संस्कृति विशेषकों व संकुलो के विनिमय (Exchange) को **अंतर संस्कृतिग्रहण** (Transculturation) कहते हैं।
3. एक जीवन पद्धति का दूसरी जीवन पद्धति द्वारा विस्थापन **परसंस्कृति ग्रहण** (Acculturation) है।

- परसंस्कृतिग्रहण से सात्मकीकरण (Assimulation) तक पहुंचा जा सकता है, किन्तु प्राय: ऐसा नहीं होता। अधिकृत (प्रभावी) संस्कृति पहले तो टूटती है, किन्तु बाद मे अपने व्यक्तित्व के क्षय की पूर्ति हेतु प्रतिक्रियाशील हो उठती है।
- ऐसी प्रतिक्रिया को प्रति परसंस्कृतिग्रहण कहा जाता है। भारत मे इसका उदाहरण झारखण्ड आंदोलन रहा है।
- परसंस्कृतिग्रहण संबंधी अध्ययन इस धारणा से अभिप्रेत है कि विश्व मे कोई भी संस्कृति अछूती या शुद्ध नहीं है।
- इस तरह से पर संस्कृति ग्रहण **द्विपक्षीय प्रक्रिया** (Two Way Process) है।
- परसंस्कृति ग्रहण के विकास मे लिंटन, रेडफील्ड, हर्षकोविट्ज, हार्बल, वील्स

NET, JRF Manish Singh TG Cl

आदि का महत्वपूर्ण योगदान है।

- संस्कृति के सम्बर्द्धन व विकास के नवीन मूल्यों को ग्रहण करना आवश्यक है। लेकिन अनियंत्रित पर संस्कृतिकरण घातक सिद्ध हो सकता है।
- **परसंस्कृतिकरण** के लिए यह जरूरी है कि दोनो संस्कृतियों मे निकटता हो, मूल्य, मानदण्ड, प्रतिमान मे भी समानता होनी चाहिए। लेकिन कभी-कभी ऐसा नहीं भी देखा जाता। पर संस्कृति ग्रहण दबाव मूलक भी हो सकता है।
- **संस्कृति समेकता के सिद्धांत या संस्कृति एकीकरण के सिद्धांत** (Theories of Cultural Integration) ये सिद्धांत इस प्रश्न के उत्तर है कि 'आखिर वह क्या है जो कि संस्कृति को एक अर्थपूर्ण समग्र बनाता है।

प्रकार्यावादी दृष्टिकोण: प्रकार्यवादियों का मत है कि संस्कृति एक संपूर्णता है, संस्कृति के प्रत्येक तत्व का कोई न कोई प्रकार्य अवश्य होता है, जो संपूर्ण संगठन में अपना सहयोग करता है।

संक्षेप में सम्पूर्ण सांस्कृतिक संगठन को सुचारू रूप से चलाने में एक सांस्कृतिक तत्व द्वारा दिया गया योगदान ही उस तत्व का प्रकार्य है।

डर्कहाइम ने सर्वप्रथम समाजशास्त्र में प्रकार्यवाद का प्रयोग किया था।

मैलिनॉस्की, रेडक्लिफ ब्राउन ने मानवशास्त्री अध्ययन मे प्रकार्यवादी दृष्टिकोण अपनाया है।

मैलिनॉस्की के अनुसार संस्कृति मानव/व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है मैलिनास्की ने मानव की सात (7) मूलभूत आवश्यकताओं का उल्लेख किया है:

1. शरीर पोषक
2. उत्पादक
3. शारीरिक सुख
4. सुरक्षा
5. गति
6. वृद्धि
7. स्वास्थ

संस्कृति का प्रत्येक तत्व मनुष्य की किसी न किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए ही बना है और कोई भी तत्व उसी समय तक संस्कृति मे बना रहेगा जब तक की वह किसी न किसी मानवीय आवश्यकता की पूर्ति करेगा।

मैलिनास्की संस्कृति को आत्मनिर्भर और संपूर्ण रूप में मानते हैं, यदि संस्कृति के किसी पहलू मे परिवर्तन आता है तो संपूर्णता में भी परिवर्तन आएगा।

मैलिनास्की, टायलर द्वारा दी गयी परिभाषा को काम मे लेते हैं, परंतु टायलर की तरह संस्कृति को पराजैविक (Super Organic) नहीं मानते हैं।

विकासवादियो ने प्रकार्यहीन संस्कृति अवशेषों को अवशेष या अतीत के ठूंठ ढूंढ कहा, मैलिनॉस्की ने यह कह कर इसकी आलोचना की तथा कथित अवशेषों में किसी संस्कृति विशेष के लिए उपर्युक्त स्थान तलाशने की क्षमता नहीं थी, एक संस्कृति के अन्दर कुछ भी असंबद्ध नहीं होता अपितु सभी पक्ष अंतर-सम्बंधित होते हैं एवं किसी भी एकाकी विशेषक का स्वयं मे कोई अर्थ नहीं होता।

मैलिनॉस्की संस्कृति बहुलतावाद में विश्वास करते हैं।

प्रसार के सम्बंध में मैलिनास्की ने बतलाया की एक संस्कृति तत्व (विशेषक) प्रसार के बाद अपना मूल आकार खो तो सकता है किंतु कार्य वही कर पाएगा जिसकी क्षमता उसके प्रसारण की संस्कृति मे मौजूद थी।

संस्कृति के किसी भी पक्ष में परिवर्तन का प्रभाव सम्पूर्ण संस्कृति पर पड़ता है-मैलिनॉस्की।

NET, JRF Manish Singh EG Cla

रेडक्लिफ ब्राउन : रेडक्लिफ ब्राउन मात्र व्यक्ति के अस्तित्व निर्वाह की तुलना में समाज के अस्तित्व निर्वाह पर विशेष जोर देते हैं। प्रत्येक संस्था का औचित्य पूरे समूह की सुदृढ़ता बनाये रखने मे है, न कि व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति के रूप में।

संस्कृति के प्रतिमान (Pattern of Culture): **रूथ वेनेडिक्ट** पुस्तक 'The Pattern of Culture'

किसी संस्कृति का एकीकरण वह स्थायी या अर्द्धस्थायी जीवन शैली है जो संस्कृति के आन्तरिक तत्वों के संयोजन द्वारा बनती है, इस जीवन शैली को रूथ वेनेडिक्ट ने 'संस्कृति के प्रतिमान' (Pattern of Culture) कहा।

किसी संस्कृति मे ऐसे कई 'संस्कृति के प्रतिमान' देखे जा सकते, जब ये प्रतिमान आपस मे मिलकर एक **'संपूर्ण जीवन शैली'** का निर्माण करते हैं तो उसे **संस्कृति परम प्रतिमान** "Cultural Configuration" कहा जाता है।

यहां यह ध्यान देने योग्य है कि संस्कृति प्रतिमानो का **'अर्थपूर्ण' संयोजन ही** Configuration **है**। इस अर्थपूर्ण संयोग का होना उस मूल लक्षण के कारण होता है जो उस संस्कृति के सभी पक्षों के आधार मे है, और सभी पक्षों पर अपना प्रभाव डालते हैं। इस **'मूल लक्षण' को रूथवेनेडिक्ट ने 'जीनियस'** कहा है।

वेनेडिक्ट ने बताया कि यह जीनियस दो प्रकार का होता है:

1. **अपोलो धर्मी** (Apolonial) : देव गुण, शांत स्वभाव
2. **डायोनियस धर्मी** (Dionial) : राक्षस गुण, लड़ाकू।

जिस संस्कृति का एकीकरण 'अपोलो धर्मी' जीनियस के कारण होगा वह शांत प्रवृत्ति की होगी तथा जिस संस्कृति का एकीकरण 'डायोनियस धर्मी' 'जीनियस' के कारण होगा वह लड़ाकू आक्रामक होगी।

डायोनिसियस धर्मी : डोबू व क्वाटिकुल (उत्तरी-पूर्वी अमेरिका)

अपोलो धर्मी : प्यूबलो (न्यू मेक्सिको)

संस्कृति या प्रेरक मान्यताएं (Culture Themes): संस्कृति संबंधी अवधारणाओं में देखें।

जीवन शैली : राबर्ट रेडफील्ड

- संस्कृति एकीकरण से संबंधित अंतिम अवधारणा।
- **रेडफील्ड** की यह अवधारणा **'लिओनेल ट्रिलिंग' के "मैनर्स"** से संबंधित है।
- 'जीवन शैली' किसी संस्कृति की सर्वाधिक तात्विक व स्थायी विशेषताएं है जो समय के प्रवाह में भी अपनी निरन्तरता को बनाये हुए है।
- ये संपूर्ण संस्कृति को नहीं बल्कि उसके कुछ पक्षों को दर्शाती हैं।
- ये व्यवहार के वे तरीके हैं जो व्यक्ति के स्पष्ट, अस्पष्ट निर्णयों के योग से बनते हैं तथा एक आदर्श जीवन के निर्माण में योदान देते हैं।

संस्कृति संबंधित अवधारणाएं:

सांस्कृतिक विलम्बना (Cultural Lay): इस अवधारणा का प्रयोग **ऑगबर्न ने अपनी पुस्तक** 'Social Change' **में 1922 में किया था।** ऑगबर्न ने संस्कृति के दो पक्ष बतलाएं:

1. **भौतिक संस्कृति** : मानव निर्मित वस्तुएं जैसे मकान, साइकिल, मोटर-गाड़ियां आदि।
2. **अभौतिक संस्कृति** : मूल्य, आदत, मानदण्ड, विश्वास आदि।

आगवर्न ने बताया कि भौतिक संस्कृति मे तीव्र गति से परिवर्तन होता है, जबकि अभौतिक संस्कृति में परिवर्तन धीमी गति से होता है, परिणामस्वरूप अभौतिक संस्कृति भौतिक संस्कृति से पिछड़ जाती है, इसी पिछड़न की स्थिति को आगवर्न ने सांस्कृतिक

NET, JRF Manish Singh EG Cla

विलम्बना कहा। विलम्बन शब्द का अर्थ किसी वस्तु के पहुंचने में देरी है।

यह अवधारणा इस बात पर प्रकाश डालती है कि समाज ने तकनीकि विकास और उसकी नैतिक व कानूनी संस्थाओं मे समान गति से परिवर्तन नहीं हो रहा है। इस पिछड़ेपन के कारण कभी-कभी सामाजिक संघर्ष व अन्य समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं।

ऑगबर्न ने देखा कि संस्कृति में परिवर्तन हमेशा, आर्थिक संस्थाओ में परिवर्तन के अनुसार नहीं होता उन्होंने आर्थिक परिवर्तनों के फलस्वरूप परिवार में परिवर्तनों कीचर्चा की है, आर्थिक परिवर्तन परिवार में श्रम विभाजन को बढ़ावा तो अवश्य देता है लेकिन इस विचारधारा कि 'महिलाओं का स्थान घर पर है' में परिवर्तन नहीं ला पाता है।

ऑगबर्न ने सांस्कृतिक विलम्बन के चार कारण बताये हैं:

1. लोगो के मन मे नये विचारो के प्रति भय होता है।
2. लोग अपनी परम्पराओ को नहीं छोड़ना चाहते, अपने इतिहास से उनमे जुड़ाव पाया जाता है।
3. पुरानी विचारधारा मे कुछ लोगो का स्वार्थ निहित होता है।
4. नये विचारो, मूल्यों, मानदंडो के परीक्षण में, कि वे सही है या गलत कठिनाई होती है।

सांस्कृतिक विलम्बन हमेशा दुष्प्रकार्यात्मक नहीं है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा भी देता है।

तकनीकि विलम्बन (Technological Lag)**: मकीवर तथा पेज ने सांस्कृतिक विलम्बन की अवधारणा के विरोध में तकनीकी विलम्बन की अवधारणा दी।** इन्होने कहा कि तकनीकी सम्बंधी विकास मे असंतुलन देखा जा सकता है न कि भौतिक-अभौतिक में तकनीकी संबंधी विकास का एक पक्ष आगे निकल जाता है जबकि उसी तकनीक का दूसरा पक्ष पीछे रह जाता है। जैसे भारत ने राकेट तो बना लिया, लेकिन क्रायोजनिक इंजन का विकास अभी प्रारंभिक चरण में है। टी.वी., रेडिया आदि बनाने का ज्ञान पहले आया और इनका आविष्कार बाद में हुआ।

सांस्कृतिक सापेक्षवाद (Cultural Relativism)**:** 'अपनी संस्कृति को अपनी तथा दूसरे की संस्कृति को उनकी दृष्टि से देखना' सांस्कृतिक सापेक्षवाद का आधार है।

सांस्कृतिक सापेक्षवाद विश्लेषण की एक विधि है जिसमें किसी भी समाज या संस्कृति का वस्तुनिष्ठ (Obejctive) अध्ययन किया जाता है। इसके अंतर्गत किसी संस्कृति की विशेषताओं को उसके सदस्यों की दृष्टि से विश्लेषित किया जाता है।

संस्कृति सापेक्षवाद के दो आधार हैं

1. नृजातिकेन्द्रवाद (Ethnocentrism) का विरोध।
2. विश्वास (Belief) सापेक्ष होते हैं जिनका विश्लेषण उसी समाज को ध्यान में रखकर करना चाहिए।

सांस्कृतिक सापेक्षवाद शब्द का प्रयोग डब्लू. एच. रिवर्स ने विकासवादियो की आलोचना में किया, परंतु इस अवधारणा के विकास का श्रेय-फ्रेंज बोआस व रूथ वेनेडिक्ट को जाता है।

सांस्कृतिक सापेक्षवाद की अवधारणा सांस्कृतिक बहुलवाद (Cultural Pluralism) का आधार है। सांस्कृतिक बहुलवाद में एक ही समाज मे विभिन्न संस्कृतियों के लोग मिलजुलकर, सामान्यत: सौहार्दपूर्वक रहते हैं। भारत, अमेरिका, ब्रिटेन आदि इसके उदाहरण हैं।

सांस्कृतिक बहुलवाद और धार्मिक बहुलवाद समानार्थी अवधारणाएं हैं। इन दोनो में लोग 'अनेकता मे एकता' का प्रदर्शन करते हैं।

NET, JRF Manish Singh ECCla

सांस्कृतिक पुर्नउत्पादन (Cultural Reproduction): **पी. बो र्डि यू (1973)**

यह अवधारणा ब्रिटिश समाजशास्त्री पी. बोर्डियू के द्वारा प्रतिपादित की। बोर्डियू ने देखा कि शिक्षा व्यवस्था का इस्तेमाल प्रभावी वर्ग (Dominant Class) की संस्कृति के पुर्नउत्पादन मे किया जा रहा है, जिससे कि उनकी प्रभाविता निरन्तर बनी रहे। ऐसी शिक्षा अन्य वर्गो पर थोपी जा रही है जिससे कि वे प्रभावी वर्ग की संस्कृति को स्वीकार कर लें, और इसके लिए शिक्षा संस्थानो का सहारा लिया जा रहा है।

सांस्कृतिक बहुलवाद (Cultural Pluralism): सांस्कृतिक बहुलवाद का तात्पर्य ऐसे समाज से है जिसमे कई संस्कृतियों के लोग आपस में सौहार्द पूर्वक रहते हैं। हमारा देश भारत इसका अच्छा उदाहरण है। यह सात्मीकरण की उल्टी अवधारणा है।

नव संस्कृतिकरण (Neo Culturation): नवीन सांस्कृतिक-तत्वो को अपनाने, सीखने की प्रक्रिया को नव संस्कृतिकरण कहते हैं।

नृजाति केन्द्रवाद (Ethnocenricism): **'समनर'**

"अपनी संस्कृति को श्रेष्ठ व दूसरे की संस्कृति को निम्न मानते हुये घृणा की दृष्टि से देखना नृजातिकेन्द्रवाद है।" Ethnocenricism शब्द का **प्रयोग सर्वप्रथम डब्लू.जी. समनर ने (1906)** में अन्त:समूह व वाह्य समूह के संदर्भ में किया। अन्त:समूह के लोगों के मन मे यह भाव होता है कि उनके मूल्य, प्रथाएं, व्यवहार नि:संदेह रूप से दूसरो से बेहतर हैं।

परजाति केन्द्रवाद (xenocentricism): अपनी संस्कृति को हीन समझना, उसके प्रति घृणा रखना और दूसरों की संस्कृति को श्रेष्ठ समझना परजाति केन्द्रवाद है।

Zionism : जियोनिज्म का तात्पर्य एक राजनीतिक आंदोलन से है, जिसमे ज्यूक के लिए एक अलग राष्ट्र (इज़राएल) की मांग की गयी थी,से है। यह अति नृजातिकेन्द्रिता से सम्बंधित है।

परसंस्कृति भयता (Xenophobia): दूसरों की संस्कृति को संदेह की दृष्टि से देखना और उसके डरना Xenophobia के अंतर्गत आता है।

सांस्कृतिक पूंजी (Cultural Capital): **पीटर बोर्दियू ने इस शब्द का प्रयोग जे.सी. पैसेरॉन** (J.C. Passeron) **के साथ** 'Reproduction in Education, Society and Culture' **की आलोचना करते हुए किया।**

इन्होने दावा किया कि मध्यम वर्ग के बच्चे संस्कृति और भाषा प्रवीणता सम्बंधी योग्यता अपने माता-पिता से भेंट स्वरूप प्राप्त करते हैं और यही योग्यता उनकी स्कूली शिक्षा मे सफलता प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होती है।

यह सांस्कृतिक पूंजी कामकाजी या गरीब परिवार के बच्चों को नहीं मिलती, स्कूल मे इस पक्ष की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता और स्कूल की मूल्यांकन पद्धति मे वस्तुनिष्ठता और उदासीनता अपनायी जाती है।

इस प्रकार जिसे सैद्धान्तिक आधार पर **'प्राकृतिक क्षमता'** कहा जाता है वह वास्तविक अर्थो में दो वर्गो में आर्थिक असमानता का परिणाम है।

बोर्दियू ने विभिन्न पूंजीयों जैसे आर्थिक पूंजी, सामाजिक पूंजी, प्रतीकात्मक पूंजी, सांस्कृतिक पूंजी का जिक्र किया है और बताया कि समाज का प्रभावशाली वर्ग अपनी शक्ति संस्कृति (प्राथमिक शिक्षा की उपलब्धियों) से उन्हें प्राप्त करता है, जो परिणामत: आर्थिक-सशक्तिकरण मे भी सहायक है।

बोर्दियू इस वर्ग की **'प्रस्थिति'** को संदेहपूर्ण मानते हैं क्योंकि उनकी शैक्षणिक उपलबधियां एवं सांस्कृतिक व्यवस्था उन्हें कामकाजी वर्ग के बच्चों से अलग करती है, लेकिन फिर भी वे (मध्यम वर्गीय) पूरी तरह से प्रभावशाली आर्थिक वर्ग से सम्बंधित नहीं हो पाते।

सांस्कृतिक वंचन (Cultural Deprivation) **इसकी समनार्थी अवधारणा है।**

NET, JRF Manish Singh EG Cla

संस्कृति पारेषण: उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसके द्वारा भाषा प्रवृत्तियां, धार्मिक विश्वास आदि सांस्कृतिक घटक शिक्षा और प्रशिक्षण द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पहुंचते हैं।

सांस्कृतिक प्रतीक: प्रत्येक संस्कृति में कुछ वस्तुओं रंगो, आकृतियों, इशारो, पदार्थो का विशेष अर्थ होता है और उन्हें विशिष्ट स्थान प्राप्त होता है। जैसे: सिंदूर सुहागन का सांस्कृतिक प्रतीक है।

झंडा एक राष्ट्र का सांस्कृतिक प्रतीक है।

सांस्कृतिक लोकाचार तथा सांस्कृतिक एलडोर्स संस्कृति

संस्कृति एलडोर्स (संस्कृति का वाह्य रूप) संस्कृति लोकाचार

यह संस्कृति की औपचारिक संरचना जैसे-प्रथा, संस्था, यह मनुष्य की विश्व धारणा है या विश्व के विषय में एक संस्कृति के

मूल्य, मानदंड, अनुष्ठान आदि के संबंध में जानकारी देता है। लोगो की धारणा है। इसे विश्व के साथ संस्कृति का संबंध बताने वाले के रूप में परिभाषित किया जाता है।

किसी संस्कृति का लोकाचार हमे उसकी संपूर्ण गुणता, विचार पद्धति, एवं मान्यताओं के सम्बंध में बताता है, जो कि सम्पूर्ण संस्कृति में देखी जा सकती है।

सांस्कृतिक उद्योग (Cultural Industries): ऐसे साधन जिनसे लोक-संस्कृति का प्रचार प्रसार होता है, सांस्कृतिक उद्योग कहे जाते हैं।फ्रैंकफर्ट स्कूल की विचारधारा का मानना है कि इन साधनो (टी.वी., रेडिया, पेपर) का प्रयोग पूंजीवादी संस्कृति के प्रचार प्रसार में किया जा रहा है।

उप-संस्कृति (Sub-culture): उपसंस्कृति रहने के वे तरीके होते है जो मूल संस्कृति से कुछ बातों में अंतर रखती है, लेकिन मूल संस्कृति की विरोधी नहीं बल्कि सहयोगी होती है, अर्थात उपसंस्कृति को मानने वाले मूल संस्कृति को स्वीकार करते है, जैसे-हिन्दू संस्कृति भारतीय संस्कृति की उप-संस्कृति है। तमिल, गुजराती, असमिया, पंजाबी आदि भारतीय संस्कृति की उप संस्कृतियां हैं।

उप संस्कृतियों के विकसित होने के कारण

1. **पारिस्थितिकी :** समुद्रतट, रेगिस्तान, समतल आदि मे रहने वालो का खान-पान, वेषभूषा अलग-अलग होती है।
2. ग्रामीण व नगरीय जीवन पद्धतियां।
3. **वर्ग** भी उप संस्कृति के निर्माण का कारण है। पूंजीपति, उच्च, निम्न वर्ग की उपसंस्कृतियां अलग-अलग होती हैं।
4. **नृजातीयता:** एक भाषा, एक धर्म को मानने वाले की उपसंस्कृति अलग होती है।
5. **व्यवसाय:** डाक्टरो, की अपनी उपसंस्कृति होती है।

प्रतिरोधी संस्कृति या विरोधी संस्कृति (Counter Culture): प्रतिरोधी संस्कृति संस्कृति के लोग मूल संस्कृति के आदर्शो का खुलकर विरोध करते हैं। अमेरिका का हिप्पी संस्कृति प्रतिरोधी संस्कृति का अच्छा उदाहरण है। यह हिप्पी, अमेरिका समाज के मूल व्यवस्था को मानने के लिये बिल्कुल तैयार नहीं थे। अत: इनकी सांस्कृतिक मान्यताओं को प्रतिरोधी संस्कृति कहा गया। विरोधी संस्कृति शब्द का प्रयोग टी. रॉसजेक (ज्ण त्ब्रेमा) ने अपनी पुस्तक ष्जीम डांपदह वि ब्वनदजमत ब्नसजनतमष् में किया।

प्रति संस्कृति (Contra Culture): यह उप संस्कृति का एक प्रकार है, जिसमें प्रतिरोधी संस्कृति के गुण पाए जाते हैं, यह एक प्रकार की 'अपराधी संस्कृति' है।

बेसिक कल्चर (Basic Culture): समाज में सभी व्यक्ति लगभग समान

NET, JRF Manish Singh EG Cla

समाजीकरण की प्रक्रिया, प्रथा, परंपरा से गुजरते है, इसलिये एक समाज के सदस्य समान आदतें विकसित कर लेते हैं, जिसे लिंटन ने समाज की मूल संस्कृति (Basic culture) कहा है।

सांस्कृतिक पुनरूज्जीवन (Culture Reuitalization): यह एक प्रक्रिया है जो समाज को उसके पुराने मूल्यो की ओर लौटने के लिए प्रेरित करती है जैसे वेदों की ओर लौटो या टूट रहे सांस्कृतिक मूल्यों को नया जीवन देना सांस्कृतिक पुनरूज्जीवन है।

इमिक और इटिक कल्चर (Emic and Etic Culture): ये दोनों धारणाएं केनिथ पाइक से संबंधित है। किसी संस्कृति की इमिक व्याख्या के अंतर्गत किसी भी समूह के सूचनादाता द्वारा दिया गया स्वयं का विवरण (देशज दृष्टिकोण) आता है, जबकि इटिक व्याख्या के अंतर्गत सांस्कृतिक तत्वों का शोधकर्ता द्वारा दिया गया विश्लेषणात्मक विवरण (शोधकर्ता का दृष्टिकोण) आता है।

संस्कृति मान्यताएं (Culture Theme): संस्कृति मान्यताएं की अवधारणा का प्रयोग **'मोरिस ओपलर' ने 'अपाचे' लोगो के अध्ययन मे किया।** ओपलर ने यह अवधारणा संस्कृति की संरचना व विलेषण के संदर्भ में दी। ये वे प्रेरक तत्व हैं जो किसी व्यवहार के मूल में निहित होती हैं, ये व्यवहारो को नियंत्रित करते हैं तथा प्रेरित करते हैं।

संस्कृति मान्यताएं "रूथ वेनेडिक्ट की 'जीनियस'" की तरह हैं। परंतु ये बेनेडिक्ट की तरह दो प्रकार के जीनियस नहीं मानते बल्कि इनका मानना है कि संस्कृति मान्यताएं कई प्रकार की हो सकती हैं। इनको प्रकार क्या है यह अध्ययन कर्ता ही स्पष्ट कर सकता है।

राल्फ लिंटन ने अपनी पुस्तक "The Study of Man" **में संस्कृति के चार प्रकारों का उल्लेख किया है:**

1. **संस्कृति निर्माणक** (Cultural Construct): ये मोरिस ओपलर के संस्कृति मान्यताओं की पर्यायवाची अवधारणा है।
2. **सांस्कृतिक सार्वभौम** (Cultural Universals) : संस्कृति के ऐसे तत्व जो समाज के सभी के लिए समान महत्व रखते हैं।
3. **सांस्कृतिक विकल्प** (Cultural Alternatives): किसी समाज में जब एक ही परिस्थिति मे कई प्रकार के व्यवहार करने की आजादी होती है।
4. **सांस्कृतिक विशेषताएं** (Cultural Specialities): जब समाज में कुछ, व्यक्तियों या उप समूहों, समूहों के लिए विशेष व्यवहार अपेक्षित होता है। ये व्यवहार समाज के सभी सदस्यों द्वारा अपेक्षित नहीं होते।

सांस्कृतिक सार्वभौमिक तत्व (Cultural Univeralism): **एन्थनी गिडेन्स** - संस्कृति के ऐसे तत्व जो सभी संस्कृतियों मे पाए जाते हैं।

गरीबी की संस्कृति (Culture of Poverty): **आस्कर लेविस ने 1966 में अपनी पुस्तक 'ला विडा' में** मैक्सिको तथा प्यूर्टोरिको मे रहने वाले गरीब परिवारों का अध्ययन किया और गरीबी की संस्कृति की धारणा का प्रतिपादन किया। इस अवधारणा के अनुसार इस क्षेत्र में रहने वाले परिवारों में गरीबी पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है और हीनभावना से त्रस्त होकर ये परिवार बदलते सामाजिक परिवेश में कोई भी उपक्रम अपनाने से डरते हैं। लेविस के अनुसार इन गंदी बस्ती में रहने वाले बच्चे 6-7 वर्ष की उम्र में पहुँचते-पहुँचते अपनी सांस्कृतिक मूल्यों को ग्रहण कर लेते है, जिसके कारण मनोवैज्ञानिक रूप से अपने को आगे बढ़ाने के लिये तैयार नहीं कर पाते। इनके मूल्य व मानदंड इन्हें भाग्यवादी बना देते हैं, ये गरीबी को ही अपना जीवन समझते हैं।

स्वायत्त संस्कृति (Autonomous Culture): **यह अवधारणा राबर्ट रेडफील्ड से संबंधित है** इनके अनुसार विश्व में अभी भी ऐसे अनेक जनजाति समुदाय है जिनका

NET, JRF Manish Singh EG Cl

बाहरी दुनिया से सम्पर्क नहीं है। ये संस्कृतियाँ आत्मनिर्भर एवं बाहर से अप्रभावित है, इसलिये ये स्वायत है। ऐसी जनजातयों में इन्होंने अण्डमान द्वीप की जारवा संस्कृति का उदाहरण दिया।

Temporocentrism: **बियरस्टीड** जीवन के अच्छे समय से बाकी समयों की तुलना करना।

Ego Centrism: (व्यक्तिवादी नृजातिकेन्द्रिता)

सांस्कृतिक प्राधान्य (Cultural Hegemony): **ग्राम्सी**-एक संस्कृति (व्यक्ति/समूह) द्वारा दूसरे पर अपना प्रभाव जमा लेना सास्कृतिक प्राधान्य होता है।

संस्कृति संघर्ष (Cultural Conflict): जब दो समूहो, समुदायो में आपस में वैचारिक विरोध हो तो इसे संस्कृति संघर्ष कहते हैं।

सांस्कृतिक प्रघात (Cultural Shock): जब व्यक्ति या समूह अपनी से भिन्न संस्कृति का आत्मसातीकरण करता है तो कुछ समय के लिए वह दूसरी संस्कृति के मूल्यों, मानदण्डों, व्यवसायों आदि को नहीं समझ पाता।

NET, JRF
Manish Singh
EG Cla